सामाजिक परिवर्तन के मुख्य स्रोत
(Important Sources of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन के मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं:-

(1) आविष्कार :—

विज्ञान और प्रोद्योगिकी के जगत में मनुष्य के आविष्कार इतने अधिक है कि उनकी गिनती करना मुश्किल है। विज्ञान और प्रोद्योगिकी क्षेत्र के आविष्कारों ने मानव समाज में एक युगान्तकारी एवं क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। आज विश्व में शायद ही कोई व्यक्ति या समाज होगा जिसका जीवन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित न हुआ हो। मानव समाज में जितने भी परिवर्तन आए है, उन परिवर्तनों के मुख्य स्रोत भौतिक जगत के आविष्कार ही रहे है।

(2) खोज :—

मनुष्य ने अपने ज्ञान एवं अनुभवों के आधार पर अपनी समस्याओं को सुलझाने और एक बेहतर जीवन व्यतीत करने के लिए बहुत तरह की खोज की है। शरीर में रक्त संचालन, बहुत सारी बीमारियों के कारणों, खनिजों, खाद्य-पदार्थों, पृथ्वी गोल है एवं वह सूर्य की परिक्रमा करती है आदि हजारों किस्म के तथ्यों की मानव ने खोज की जिनसे उनके भौतिक एवं गैर-भौतिक जीवन में काफी परिवर्तन आया। मनुष्य एक खोजी प्रवृति का जीव है और वह आज भी नयी-नयी खोजों में लगा है, इन खोजों की सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(3) प्रसार :—

सांस्कृतिक जगत के परिवर्तन में प्रसार का प्रमुख योगदान रहा है। पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण एवं भूमण्डलीकरण जैसी प्रक्रियाओं का मुख्य आधार प्रसार ही रहा है। आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी का इतना अधिक विकास हुआ है कि प्रसार की गति बहुत तेज हो गयी है। यही कारण है कि आज हम एक विश्व या विश्व ग्राम जैसी अवधारणाओं की बात करने लगे हैं।

(4) आन्तरिक विभेदीकरण :—

जब हम सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए तो ऐसा लगता है कि परिवर्तन का एक चौथा स्रोत भी सम्भव है - वह है आन्तरिक विभेदीकरण। सामाजिक परिवर्तन समाज की स्वाभाविक उद्विकासिय प्रक्रिया से भी सम्भव होता है। हर एक समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुसार धीरे-धीरे विशेष स्थिति में परिवर्तित होता रहता है। प्रारम्भिक समाजशास्त्री जैसे — स्पेंसर, हॉबहाउस, दुर्खीम एवं बहुत सारे मानवशास्त्रियों ने अपने उद्विकासिय सिद्धान्त में स्वतः चलने वाली आन्तरिक विभेदीकरण की प्रक्रिया पर काफी बल दिया है। इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है कि इस आन्तरिक विभेदीकरण की प्रक्रिया में खोज एवं आविष्कार का अपना एक अलग महत्त्व है।